देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम्।। ऋ० १/८९/२

ISSN : 2395-7115
Sept. 2025
Vol.-22, Issue-3(2)

Impact Factor
8.642

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

21वीं सदी का साहित्य : नव विमर्श

Special Issue Editor :
Dr. Poornima S.

Special Issue Co-Editor :
Dr. Anuradha P
Ms. V. Amudha

Editor :
Dr. Naresh Sihag
Advocate

Publisher :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
#202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

स्व. चौ. गुगनराम सिहाग व उनकी छोटी बहन स्व. श्रीमती गीना देवी के शुभाशीर्वाद से प्रकाशित

JOURNAL OF HUMANITIES, COMMERECE, SCIENCE, MANAGEMENT & LAW

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Vol. 22 ISSUE-3(2) (सितम्बर 2025) ISSN : 2395-7115

प्रेरणा :
चौ. एम. सिहाग

विशेषांक सम्पादिका :
डॉ. पूर्णिमा एस.,
डॉ. अनुराधा पी.,
मिस वी. अमुधा

सम्पादक :
डॉ. नरेश सिहाग 'बोहल', एडवोकेट
एम.ए. (समाजशास्त्र, लोक प्रशासन, हिन्दी शिक्षा शास्त्र, पत्रकारिता),
एम.फिल (समाजशास्त्र, हिन्दी) एम. लिब., एल-एल.बी. (ऑनर्स),
डिप्लोमा पंचायती राज (रजत पदक विजेता), पी.एच.डी. (हिन्दी)
डी.लिट् (मानद उपाधि), काठमांडू, नेपाल

प्रकाशक :
गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी (रजि.)
202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड, भिवानी-127021 (हरियाणा)

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL REFEREED/REVIEWED AND INDEXED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
ISSN 2395-7115

सम्पादकीय सम्पर्क :
डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट
202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड,
भिवानी-127021 (हरियाणा)
Email : nksihag202@gmail.com
मो. 09466532152

Published by :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
202, Old Housing Board,
Bhiwani-127021 (Haryana) INDIA
Email : grsbohal@gmail.com
Facebook.com/bohalshodhmanjusha
Website : www.bohalsm.blogspot.com
WhatsApp : 9466532152

All Right Reserved by Publisher & Editor

Price

Individual/Institutional : 1100/-

Disclaimer :

1. Printing, Editing, Selling and distribution of this Journal is absolutely honorary and non-commercial.
2. All the Cheque/Bank Draft/IPO should be sent in the name of Gugan Ram Educational & Social Welfare Society payable at Bhiwani.
3. Articles in this journal do not reflect the Views or Policies of the Editor's or the Publisher's. Respective authors are responsible for the originally of their views/opinions expressed in their articles.
4. All dispute will be Subject to Bhiwani, Hry. Jurisdication only.

Printed by : Manbhawan Printers, Old Bus Stand Road, Naya Bazar, Bhiwani (Hry.)

बोहल शोध मंजूषा परिवार*

मानद संरक्षक

प्रो. राधेमोहन राय
पूर्व उप प्राचार्य,
राजकीय स्नातकोत्तर महा.,
अलवर, राजस्थान।

डॉ. राजेन्द्र गोदारा
परीक्षा नियंत्रक,
टांटिया विश्वविद्यालय,
श्रीगंगानगर, राजस्थान।

डॉ. विनोद तनेजा
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
गुरूनानक वि.वि. अमृतसर
पंजाब।

सम्पादक मण्डल

सह सम्पादिका :
डॉ. रेखा सोनी
उप प्राचार्या, शिक्षा विभाग
टाटिया वि.वि. श्रीगंगानगर।

सह सम्पादिका :
डॉ. सुशीला आर्या
हिन्दी विभाग, चौ. बंसीलाल
विश्वविद्यालय, भिवानी।

प्रबंध सम्पादक :
समुन्द्र सिंह
भिवानी, हरियाणा।

विधि विशेषज्ञ

डॉ. रामफल दलाल, एडवोकेट
जिला न्यायालय
भिवानी, हरियाणा।

अजीत सिहाग, एडवोकेट
पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट,
चंडीगढ़।

चरणवीर सिंह, एडवोकेट
जिला न्यायालय
पटियाला, पंजाब।

विषय विशेषज्ञ/परामर्शदात्री/शोधपत्र निरीक्षण समिति

माई मनीषा महंत
किन्नर अधिकार ट्रस्ट
भूना, जिला कैथल, हरियाणा

डॉ. विश्वबंधु शर्मा
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
बाबा मस्तनाथ वि.वि. रोहतक

डॉ. संजय एल. मादार
विभागाध्यक्ष, पी.जी. केन्द्र
द.भा.हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद।

डॉ. गीता दहिया, प्राचार्या,
नैशनल टीटी कॉलेज फॉर गर्ल्स
अलवर, राजस्थान

डॉ. विनोद कुमार
हिन्दी विभाग, लवली प्रोफेशनल
यूनिवर्सिटी, पंजाब

डॉ. मो. रियाज़ खान
बीएमएस वूमैन कॉलेज आटोनोमेस
बेगलूरू

डॉ. वनिता कुमारी
च. दादरी (हरियाणा)

श्री सहदेव समर्पित
सम्पादक, शान्तिधर्मी, जीन्द

डॉ. अंजली उपाध्याय
उत्तर प्रदेश

डॉ. लता एस. पाटिल
राजीव गांधी बीएड कालेज
धारवाड़, कर्नाटक

प्रो. अमनप्रीत कौर
गुरू तेग बहादुर खालसा कॉलेज
फॉर वूमैन, दसूहा, पंजाब

डॉ. वर्षा रानी
संस्कृत विभाग, डॉ. भीमराम
अम्बेडकर, वि.वि., आगरा

प्रो. कमलेश चौधरी
राजकीय रणबीर महाविद्यालय
संगरूर, पंजाब

डॉ. किरण गिल
दीनदयाल टी.टी. महाविद्यालय
बारी, जिला सीकर, राज.

डॉ. सविता घुड़केवार
पीजी विभाग, दक्षिण भारत
हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास

डॉ. परमजीत कौर
बरेली कॉलेज बरेली,
उत्तर प्रदेश।

डॉ. राजकुमारी शर्मा
नेपाल

डॉ. श्रीविद्या एन.टी.
श्री शंकराचार्य संस्कृत वि.वि.
केरल।

डॉ. बी. संतोषी कुमारी
पी.जी.विभाग, दक्षिण भारत हिन्दी
प्रचार सभा, मद्रास

श्री राकेश ग्रेवाल
सन जॉस,
कैलिफोर्निया, यू.एस.ए.

डॉ. पंडित बन्ने
भारत महाविद्यालय,
सोलापुर (महाराष्ट्र)

डॉ. पायल लिल्हारे
अमरशहीद चंद्रेशेखर आजाद
शा.स्ना.महा. निवाड़ी, मध्यप्रदेश

श्री राकेश शंकर भारती
यूक्रेन।

डॉ. उमा सैनी
आई.ए.एस.ई. विश्वविद्यालय
सरदारशहर, राजस्थान

डॉ. मनमीत कौर
राधा गोविन्द वि.वि.,
रामगढ़, झारखण्ड।

डॉ. रीना उन्नीयाल तिवारी
शिक्षा संकाय, डी.ए.वी. पीजी
कालेज, देहरादून

डॉ. सुरजीत सिंह कस्वां
डीन फिजिकल एजुकेशन
टांटिया वि.वि., श्रीगंगानगर,

डॉ. शबाना हबीब
त्रिवन्तपुरम, केरल

डॉ. शिवकरण निमल
राजस्थान

डॉ. राधाकृष्णन गणेशन
वाराणसी

डॉ. मानसिंह दहिया
हरियाणा

डॉ. नीलम आर्या
उत्तर प्रदेश

डॉ. रवि सुण्डयाल
जम्मू कश्मीर

प्रो. नरेन्द्र सोनी
डी.एन. कॉलेज, हिसार।

प्रो. रोहतास
डी.एन. कॉलेज, हिसार।

प्रो. सत्यबीर कालोहिया
पूर्व प्राचार्य, कैलिफोर्निया।

डॉ. इस्पाक अली
प्राचार्य, लाल बहादुर शास्त्री
शिक्षा महाविद्यालय, बेंगलूरू

प्रो. रेखा रानी
गवर्नमेंट कॉलेज
संगरूर, पंजाब

डॉ. के.के. मल्हौत्रा
पूर्व विभागाध्यक्ष
गवर्नमेंट कॉलेज, गुरदासपुर

डॉ. संजीव कुमार विश्वकर्मा
शासकीय महाविद्यालय,
लवकुश नगर, मध्य प्रदेश

डॉ. परमानन्द त्रिपाठी
एचओडी एजुकेशन, एल.एन.डी.
कालेज, मोतिहारी, बिहार

डॉ. करमजीत कौर
प्राचार्या, दशमेश गर्ल्स कॉलेज
चक आला, मुकेरिया, पंजाब

*सम्पूर्ण बोहल शोध मञ्जूषा परिवार/सम्पादक मण्डल अवैतनिक है।

अनुक्रमाणिका – सितम्बर 2025 – विशेषांक

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ
1.	शुभकामना संदेश		11–14
2.	सम्पादकीय	डॉ. पूर्णिमा एस.	15–16
3.	मन्नू भण्डारी की कहानियों में राजनीतिक मूल्य 'मैं हार गई, 'अ-लगाव' और 'तीसरा हिस्सा' कहानी के विशेष संदर्भ में)	स्निग्धा सिंह, डॉ. बिमला पात्र	17–21
4.	मालती जोशी की कहानियों में बदलते समाज की यथार्थ तस्वीर	डॉ. सावित्री देवी	22–25
5.	इक्कीसवीं सदी के हिन्दी कथा साहित्य में किन्नर विमर्श	डॉ. दिलीप सिंह राजपूत	26–31
6.	मृदुला गर्ग के 21वीं सदी के उपन्यासों में स्त्री विमर्श	Dr. Mahammad Nazim Parveen	32-36
7.	राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2020 आधारित अर्थशास्त्र पाठ्यपुस्तकों के प्रति अभिधारकों के प्रत्यक्षण का अध्ययन	राकेश वर्मा	37–40
8.	21वीं सदी की लघु कथाओं में बदलती सामाजिक वास्तविकताएं	डॉ. प्रियंका परमार	41–44
9.	डिजिटल डिवाइड : ग्रामीण-शहरी असमानताओं का अध्ययन	डॉ. गौरव शर्मा	45–50
10.	स्त्री विमर्श : 21वीं सदी हिन्दी कविता और कथा साहित्य में स्त्री दृष्टि	सुशीला साहू	51–57
11.	शहरी बनाम ग्रामीण चेतना : समकालीन साहित्य का परिप्रेक्ष्य	डॉ० मौ० मुजफ्फर अंसारी	58–65
12.	सुशीला टाकभौरे के कथाओं की भाषागत प्रवृत्तियों की समीक्षा	प्रियंका प्रफुल दरवाड़े, डॉ. सुमेध पी. नागदेवे	66–71
13.	इक्कीसवीं सदी का साहित्य और स्वास्थ्य विमर्श : मशीन लर्निंग आधारित मधुमेह पूर्वानुमान का अध्ययन	के के इश्विता श्री	72–79
14.	संवेदनहीन होती मनुष्यता और साहित्य की भूमिका	नयना जैन, डॉ० सुमन कौशिक	80–83
15.	सरकार की विफल योजनाएँ, टूट गया किसान पर न टूटी 'कालिचाट'	अन्नपूर्णा भोसले	84–87

16.	साइबर सुरक्षा : डिजिटल युग की आवश्यकता एवं जन-जागरूकता का विश्लेषण (प्रधानमंत्री मन की बात कार्यक्रम के विशेष सन्दर्भ में)	डॉ. उमेश कुमार, डॉ. क्रांति कुशवाहा	88-94
17.	21वीं सदी के हिंदी उपन्यासों में सामाजिक चेतना	नीतु कुमारी	95-99
18.	स्त्री विमर्श के संदर्भ में मृदुला गर्ग के उपन्यास	पल्लवी दास	100-102
19.	स्त्रियों के उन्नति में आंबेडकर जी का योगदान	डॉ. अजय	103-106
20.	स्मार्ट मशीन लर्निंग प्रणाली द्वारा हृदय रोग का पूर्वानुमान : स्वास्थ्य विमर्श, डिजिटल कथाएँ और 21वीं सदी का परिप्रेक्ष्य	के. के. इश्विन्ता श्री	107-118
21.	हिंदी उपन्यासों में दिव्यांग नारी की अस्मिता और विमर्श	शशिकांत चिन्नेश्वर सैबे, डॉ. रवींद्र लिंबाजी भोरे	119-122
22.	हिंदी कविताओं में पर्यावरण विमर्श	डॉ. निर्मलाबेन ईच्छुभाई पटेल	123-126
23.	हिंदी साहित्य में किन्नर विमर्श	डॉ. माया गोला	127-129
24.	हिंदी साहित्य में विश्व शांति की परिकल्पना	कोमल वर्मा	130-134
25.	हिन्दी उपन्यास और समलैंगिक विमर्श	सूर्य प्रताप सिंह, डॉ० सव्यसाची	135-139
26.	हिन्दी साहित्य की प्रेरणा की अमृत-धार : परीक्षा दबाव के हरण एवं शैक्षिक उपलब्धि के उन्नयन का सशक्त माध्यम	प्रज्ञा सिंह, लक्ष्मी मिश्रा, पावक अग्रवाल	140-149
27.	हिन्दी साहित्य में किन्नर विमर्श	Jasmine. S	150-153
28.	हिन्दी साहित्य में किसान समस्या	डॉ. राजेश यादव	154-158
29.	हिन्दी सिनेमा में अभिव्यक्त आदिवासी विमर्श	दीपशिखा सोनोवाल	159-163
30.	21-ஆம் நூற்றாண்டு தமிழ்த் திரைப்பங்கள் : புது விமர்சனப் பார்வைகள்	முனைவர் கே.எஸ்.	164-168
31.	బండిపోట్లు కవితలో స్త్రీ వాద దృక్పథం	డా. పసుపులేటి నాగమల్లిక,	169-173
32.	ఓల్గా 'ప్రయోగం'లో చర్చించిన స్త్రీవాద సమస్యలు	డా.కె.వి.శాంతకుమారి	174-178
33.	21वीं सदी का साहित्य में नारी विमर्श	Dr. Ranjita Bharti	179-183
34.	దళిత స్త్రీ వాద సాహిత్యం - సామాజిక చైతన్యం	Dr. Anitha Margaret Nelaturi	184-187

35.	हिंदी साहित्य में नारी विमर्श : संघर्ष, चेतना और सृजन	योगिता कपिलराव देशमुख, डॉ. प्रतिभा जी. येरेकर	188–193
36.	ડિજિટલ સંવાદ: ફેસબુક અને ઈન્ટરનેટમાં સાહિત્યિક સર્જનાત્મકતા-નવમાધ્યમ	ડૉ. સાધના આર. ટાંક	194–201
37.	சூழலியல் பார்வையில் "ஒரு கிராமம் சாகிறது"-கவிதைத்திறனாய்வு	முனைவர் இரா. சரஸ்வதி	202–210
38.	डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट के कहानी संग्रह 'जिंदगी जीने के वास्ते' की कहानियों में जीवन-विमर्श	डॉ. इन्दु. पी.	211–213
39.	इक्कीसवीं सदी के हिंदी उपन्यासों में किसान आत्महत्या	रघुवीर दान चारण	214–222
40.	AI के युग में बाल साहित्य पर संभावित प्रभाव	भुवनेश्वरी .एस	223–226
41.	सपनों की होम डिलिवरी उपन्यास : नारी जीवन के संदर्भ में	डॉ. वर्षाराणी जबडे	227–236
42.	हिंदी साहित्य में दलित विमर्श	डॉ धन्या. बी	237–240
43.	अनेकान्तवाद विचारों की विविधता और सहिष्णुता का संदेश	इन्द्र भंसाली 'अमर'	241–244
44.	मालती जोशी कृत 'वो तेरा घर, ये मेरा घर' में छित्रित वृद्ध समस्या	डॉ. ए. परविन	245–250
45.	२१वी सदी के हिंदी उपन्यासों में चित्रित स्त्री (विशेष उपन्यासों के संदर्भ में)	डॉ. रीना निलेश खिचडे	251–253
46.	आदिवासी विमर्श : लोकजीवन और साहित्य की अन्तर्धाराएँ	प्रतीति पाण्डेय	254–259
47.	एस० आर० हरनोट की कहानियों में पर्यावरण विमर्श	गायत्री बाल्मीकि	260–264
48.	कुमार कृष्ण की कविताओं में पर्यावरणीय विमर्श	जय कुमार	265–269
49.	खेत मजदूर और झारखंड के किसान : इतिहास एवं परंपराएँ	प्रो. जीवन कुमार साह	270–275
50.	नीरज सिंह के कथा साहित्य में स्त्री सन्दर्भ	सपना देवी	276–280
51.	ओमप्रकाश वाल्मीकि कृत 'बस! बहुत हो चुका' काव्य-संग्रह में मानवीय सरोकार	उमा देवी	281–284
52.	मिट्टी से बना अन्न	डॉ. टी. अरूणा कुमारी	285–289
53.	हसीनाबाद उपन्यास में नारी विमर्श	डॉ. अर्चना शर्मा	290–293

54.	भारतीय महिलाओं को सशक्त बनाने में कानूनी अधिकारों की भूमिका	विवेचना पाण्डेय, डॉ. सरिता भवानी मालवीय	294–300
55.	Therigatha : Legacy and Relevance in 21st Century Indian Literature	Indresh Prasad Purohit	301-310
56.	బందిపోట్లు కవితలో స్త్రీ వాద దృక్పథం	డా. పసుపులేటి నాగమల్లిక	311-315
57.	Entrepreneurial Self-Efficacy and Entrepreneurial Intentions of Tribal Women: A case Study of Chhattisgarh, India.	Dimpal Agrawal	316-328
58.	The Anatomy of Indifference : Literature as an Antidote to Modern Insensitivity	Dr. S. Farhana Zabeen, Dr. I. Jane Austen	329-334
59.	Quest for Self-Identity and Independence of Women in Preeti Shenoy's The Secret Wishlist	Dr. R. Abeetha, Dr.A. Jayashree Prabhakar	335-345
60.	Feminine Isolation and Resistance through Nature in Anita Desai's *Fire on the Mountain*	Ms.Greeshma N.P, Dr. I. Jane Austen	346-351
61.	बैंकिंग क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमता के अनुप्रयोग की संभावनाएं और चुनौतियां	डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन, श्री एच पंढरीनाथ	352–355
62.	मॉरिशस के समकालीन प्रवासी हिन्दी साहित्यकार अभिमन्यु अनत और रामदेव धुरन्धर के सृजनात्मक विचारों का अध्ययन	वी. अमुधा, डॉ. अनुराधा पाकलापाटि	356–360
63.	डॉ. विद्या बिंदु सिंह के कथा-साहित्य में बदलते सामाजिक सरोकार	जे. अशोक कुमार जैन, डॉ. अनुराधा पाकलपाटि	361–365
64.	मंजरी : किन्नर विमर्श	डी श्रीदेवी, डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन	366–369
65.	सामाजिक माध्यम और इंटरनेट पर रचनात्मकता : नए माध्यम एवं नई भाषा (बाल साहित्य के संदर्भ में)	गुरू गोविंद विश्वत, अनुराधा पाकलपाटि	370–375
66.	वृद्धों के प्रति संवेदनहीन होती मनुष्यता	बी. कमला, डॉ. अनुराधा पाकलपाटि	376–381
67.	इक्कीसवीं सदी की हिंदी कथा साहित्य में बदलता हुआ सामाजिक यथार्थ	डॉ. अनुराधा पी.	382–386
68.	कृष्नचंदर कृत 'जामुन का पेड़' कहानी में प्रशासनिक विमर्श	डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन	387–392
69.	21वीं सदी के नारी विमर्श-रेत समाधि	पूर्णिमा. जे, डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन	393–397

70.	'बुद्धिमानों की मूर्खता' : सुरेंद्र शर्मा के व्यंग्य निबंधों में राजनीतिक विमर्श	प्रिया. एस, डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन	398–403
71.	21वीं सदी में तमिलनाडु स्थित बैंकों में राजभाषा कार्यान्वयन एवं हिंदी गृहपत्रिकाओं का प्रकाशन : एक नव विमर्श	श्री एम. संजीवी कनी, डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन	404–411
72.	पर्यावरण विमर्श : साहित्य में पारिस्थितिकी और प्रकृति चिंतन (बाल कहानियों के संदर्भ में)	वेंकट शिल्पा काकि, डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन	412–416
73.	21वीं सदी के आधुनिक हिन्दी उपन्यास बेहया में केंद्रित नारी	अमरजीत	417–422
74.	हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श और कथा साहित्य में स्त्री दृष्टि	Mrs. S. Subha	423-425
75.	भूमिका द्विवेदी कृत 'किराये के मकान' उपन्यास में चित्रित महानगरीय जीवन की समस्याएँ	आर. डी. निर्मला, डॉ. अनुराधा पाकलपाटि	426–430
76.	पर्यावरण विमर्श और 21वीं सदी के उपन्यास	संगीता कुमारी	431–435
77.	समकालीन साहित्य में किसान विमर्श	इ. जाक्कुलिन, डॉ. अनुराधा पाकलपाटि	435–442
78.	इक्कीसवीं शताब्दी में उपन्यास-साहित्य के समक्ष चुनौतियाँ	डॉ. के आनंदी	443–446

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Sept. 2025 Page No. : 356-360

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

मॉरिशस के समकालीन प्रवासी हिन्दी साहित्यकार अभिमन्यु अनत और रामदेव धुरन्धर के सृजनात्मक विचारों का अध्ययन

वी. अमुधा, सहायक प्राध्यापक,
डॉ. अनुराधा पाकलापाटि, सहायक प्राध्यापक,
हिंदी विभाग, वेल्स इंस्टिट्यूट ऑफ साइंस, टेक्नोलॉजी एंड एडवांस्ड स्टडीज (विस्टास) पल्लावरम, चेन्नई।

सारांश :

इस प्रपत्र में मॉरिशस के समकालीन प्रवासी हिन्दी साहित्यकार अभिमन्यु अनत और रामदेव धुरन्धर के साक्षात्कार के आधार पर उनके सृजनात्मक विचारों का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है। दोनों सहित्याकारों के जीवन, उनके कृतियाँ, मॉरिशस समाज के प्रति उनके विचार, धर्म और मॉरिशस के बदलते समाज और संस्कृति के प्रति उनकी दृष्टिकोण आदि विषयों पर इस आलेख में व्यक्त किया गया है।

बीज शब्द : मॉरिशस, प्रवासी हिन्दी साहित्य, साक्षात्कार, संस्कृति, लगाव, यातना, त्रासदी।

प्रस्तावना :

मॉरिशस का प्रवासी हिन्दी साहित्य समृद्ध है। कविता, कहानी, उपन्यास, निबन्ध और अन्य विधाओं में महत्वपूर्ण रचनाएँ हैं, जिनमें अभिमन्यु अनत, रामदेव धुरंधर, कृष्ण लाल बिहारी, और ईश्वरचन्द्र गंगाराम जैसे लेखक शामिल हैं। यह साहित्य भारत में प्रकाशित होने वाले हिन्दी साहित्य से जुड़ा हुआ है और मॉरीशस की हिन्दी भाषा और संस्कृति को दर्शाता है, जहाँ आज भी हिन्दी का प्रचार–प्रसार किया जाता है। मॉरिशस की स्वतंत्रता के उपरांत हिंदी भाषा और विकास के लिए संगठित प्रचार ही नहीं हुए, बल्कि अनेक रचनाकारों का भी जन्म हुआ। मॉरिशस की स्वंतत्रता से लेकर आज तक के इतिहास में हिंदी साहित्य नई ऊन्चाइयों को छुआ है, लेकिन उसके अस्तित्व के लिए संकटों तथा चुनौतियों की मात्रा और संख्या भी निरंतर बढ़ती गई है।

साहित्यकारों का जीवन परिचय :

मॉरिशस के प्रख्यात समकालीन साहित्यकार अभिमन्यु अनत और रामदेव धुरंधर का जीवन परिचय नीचे दिया गया है।

अभिमन्यु अनत :

इनका जन्म 9 अगस्त 1937 वर्ष को मॉरिशस के उत्तर प्रान्त के थ्रिओले नामक गाँव में हुआ था। इनके पिता का नाम पतिसिंह व माता का नाम सुभागो देवी था। इनके पिता जी अत्यंत उदार प्रवृत्ति के व्यक्ति के थे।

साथ ही वे कुशल सामाजिक कार्यकर्ता भी थे। अभिमन्य अनत मॉरिशस के प्रवासी हिन्दी साहित्य के प्रमुख लेखकों में से एक हैं। अभिमन्यु अनत की विशेषता यह है कि वे मॉरिशस द्वीप की पहचान और प्रसिद्धि के समान प्रतीक बन गए, जैसे वहाँ के प्रथम प्रधानमंत्री डॉक्टर शिवसागर रामगुलाम अपने कृतित्व से मॉरिशस को विश्व में प्रख्यात बना दिया।

अनत बहुमुखी रचनाकार हैं। वे उपन्यासकार, कहानीकार, कवि, नाटककार, जीवनीकार, आत्मकथाकार, संस्मरणकार, यात्रा–वृत्तांतकार, लघुकथाकार, व्याख्यानकर्ता, संपादक इत्यादि अनेक रूपों में प्रसिद्द थे। उनके रचनाओं के माध्यम से हिन्दी पाठक मॉरिशस के प्रवासी भारतीयों के संघर्ष की कहानी को निकटता के साथ अनुभव करते हैं तथा भारत–मॉरिशस के संबंधों में और भी स्थायित्व, मधुरता और विश्वसनीयता लाने में सहयोगी बन सकेंगे। डॉ श्रीचित्रा वी. एम. अभिमन्यु अनत के बारे में लिखती है– "अभिमन्यु अनत का उपन्यास साहित्य चिंतन–प्रधान तथा बौद्धिकता को ढोने वाली है। उनके उपन्यासों में बदली हुई सामाजिक रूढियों की जटिलता, लाचारी तथा मुक्ति की कामनाओं का संकेत मिलता है।"[1] अभिमन्यु अनत के साहित्यिक कृतित्व ने केवल मॉरिशस ही नहीं, भारत और हिन्दी को भी सम्मानित किया है। उनकी रचनाओं में भारत से मॉरिशस में आए भारतीय गिरमिटिया मजदूरों का संपूर्ण विवरण है। हनुमान चालीसा, रामचरितमानस आदि ग्रंथों के सहारे गिरमिटिया मजदूर हिन्दू–धर्म, संस्कृति, अस्मिता तथा हिन्दी–भाषा की रक्षा की। अभिमन्यु के घर में भी हनुमान जी का छोटा–सा मंदिर है और वे प्रत्येक वर्ष दुर्गा–पूजा का आयोजन करते थे।

रामदेव धुरंधर :

मॉरिशस के पूर्वी प्रान्त के कारोलीन नामक साधारण ग्रामांचल में 11 जून 1946 को रामदेव धुरंधर जी का जन्म हुआ। धुरंधर जी के पिता का नाम श्री श्यामलाल धुरंधर था और माता का नाम श्रीमती कौशल्या धुरंधर है। इनके परिवार में चार भाई व एक बहन थी। धुरंधर जी की पढ़ाई अंग्रेजी और फ्रेंच भांषा के साथ–साथ हिन्दी में भी हुई। उस समय सरकारी नौकरी मिलना आसान न था। हिन्दी अध्यापन के लिए भेजे गए आवेदन पत्र के आधार पर 1970 में धुरंधर जी को अध्यापक पद पर नियुक्त कर लिया गया।

धुरंधर जी का सम्पूर्ण साहित्य युगीन परिस्थितियों और परिवेश की उपज है। जीवन की प्रत्येक अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थितियों में भी इन्होंने अपनी लेखनी को विराम नहीं दिया। वे आज भी समाज के विसंगतियों को अपने कृतियों में उजागर कर रहे हैं। धुरंधर जी अपनी प्रतिभा के बल पर अध्यापन के तहत सरकारी नौकरी करने लगे किन्तु धुरंधर जी का हृदय में हमेशा लेखक बनने की चाह थी। उनका प्रारम्भिक जीवन कष्टों, अभावों और संघर्षों का जीता–जागता प्रमाण है। माता–पिता की अशक्तता, पढ़ाई का छूट जाना, घर की जिम्मेदारी तथा फ्रांसीसीयों की प्रताड़ना जैसी दुर्गम कठिनाईयों ने उनके धैर्य व विश्वास को न हिला सके।

मॉरिशस के साथ जुडाव :

अभिमन्यु के दादाजी गिरमिटिया मजदूर के रूप में लाया गया था। जिन परिस्थितियों में भारतीय मजदूरों को जीना पड़ा वह हृदयविदारक हैं। अनत जी मॉरिशस के प्रवासी मजदूरों की जीवन को साहित्यिक रूप में प्रस्तुत करना चाहते थे। प्रवासी लोगों पर चाबूकों और बाँसों की बौछार होती थी। सप्ताहभर के काम से प्राप्त कमाई बारह आने और दो डिबिया चावल–दाल मिलते थे। 'रामायण' ग्रंथ पढ़ना और हिन्दी भाषा सीखना मना था। एक बहुत ही लंबी अवधि के बाद गिरिमिटिया भारतीय अपने सिर उठाने में सफल हुए थे। मॉरिशस में उनके

परिवार के साथ वही गुजरा जो हजारों मजदूरों के साथ हुआ। चोरी–चुपके से पढ़ते–पढ़ते अपनी संस्कृति को जीवित रखे आ रहे थे। उन ऐतिहासिक यातनाओं की प्रतिक्रिया स्वरूप अनत जी को लेखक बनाया।

मॉरिशस के कारोलीन गाँव से रामदेव धुरंधर विशेष लगाव है। यहीं पले, बढ़े और इसी गाँव में अपनी सफलता भी देखी और असफलता भी। इस गाँव से उनका इतना जुड़ाव है कि वे विश्व भर के देशों में घूम फिर कर बार–बार यहीं लौट आते थे। इसी गाँव के लोगों से उनका जान पहचान है जहाँ से उनको एक सफल लेखक बनाया। उन्होंने अपने गाँव के साथ लगाव को कुछ ऐसा व्यक्त करते हैं– "मैं अपने जन्म गाव में रह कर उनकी अपेक्षा ठीक ही जीवन व्यतीत कर रहा हूँ। बस मैं उन्हें भूल नहीं पाता और यह मेरे लिए अनमोल है"[2]

मॉरिशस और भारत के संबंध में साहित्य की भूमिका :

अभिमनयु अनत का मानना है कि भारतीय परंपरा से जुडे मॉरिशस के प्रवासी भारतीयों में हिन्दी साहित्य की भूमिका बहुत बड़ी है। अनत जी का कहना है, "भारतीय सरकार से बस इतनी ही अपेक्षा है कि भारत यह न भूले कि मॉरिशस के साथ उसका रिश्ता मात्र राजनीतिक और व्यापारिक नहीं है, बल्कि 150 वर्ष पुराना सांस्कृतिक संबंध है।"[3] अनत जी का मानना है कि दोनों देशों के कलाकारों, लेखकों, बुद्धिजीवियों और पत्रकारों का आदान–प्रदान करने से ही साहित्य के माध्यम से मॉरिशस और भारत का संबंध मजबूत होगा।

रामदेव धुरंधर से मॉरिशस और भारत के संबंध के बारे में दीपक कुमार पांडे द्वारा लिए गए साक्षात्कार में सवाल किया गया, तो उनका कहना है कि भारत और मॉरिशस का सबंध अब ज्यादातर राजनीतिक हो गया है। पर राजनीति में समाज और संस्कृति को बराबर ध्यान में रखा जाता है। साहित्य से भी यह पहचान बनी है। हिंदी के साहित्यकार भारत में अधिकाधिक हैं और उन्हें सांस्कृतिक दूत के रूप में परखा जाता है। साहित्य के माध्यम से भारत और मॉरिशस को जोड़ने में हिन्दी लेखक के रूप में धुरंधर जी का बहुत बडा भूमिका रहा है।

मॉरिशस में हिन्दी की वर्तमान स्थिति :

अनत जी मॉरिशस के हिन्दी पठन–पाठन को लेकर बहुत चिंतित थे। उनका मानना है कि "हिन्दी के शिक्षण–स्तर के विकास तथा हिन्दी साहित्य की प्रतिष्ठा के लिए आवश्यक है कि हम इतना जान ले कि अतीत में यह भाषा मात्र हमारी अभिव्यक्ति का संबंध नहीं थी, बल्कि वह हमें अन्दरूनी ढंग से जोडे हुई थी। हमारी अस्मिता को बरकरार रखे हुए थे।"[4] मॉरिशस में प्रकाशन की सुविधा की कमी के कारण सृजनात्मक साहित्य का प्रकाशन निराशजनक है। जिस हिन्दी की प्रचार के लिए आंदोलन हुआ करता था, आज उनके दायित्व की स्थिति विकलांग है। वे हिन्दी भाषा को मॉरिशस के राजकीय स्तर पर मान्यता की अधिकार दिलाना चाहते थे। हिन्दी की प्रचार–प्रसार के लिए वे साप्ताहिक और दैनिक प्रत्रिकाओं की आवशयकता को मानते थे। हिन्दी, जो मॉरिशस के प्रवासी भारतीयों के संघर्ष का भाषा रहा है, उसे उचित स्थान दिलाना चाहते थे।

रामदेव धुरंधर का मानना है कि मॉरिशस में हिन्दी न ही राष्ट्रभाषा है और न ही राजकीय भाषा है। क्रियोल ही मॉरिशस की प्रचलित भाषा है। धुरंधर जी के अनुसार "यहाँ हिन्दी के तीन सूत्र हैं, वे हैं भारतीयता में विश्वास, हिन्दी के प्रति सरकार की नीति और हिन्दी के माध्यम से रोटी का सवाल।"[5] भारतीय वंशज होने के नाते प्रवासी भारतीय लोग हिन्दी से प्रेम करते हैं। हिन्दी की मान्यता देखें तो इसे पढने से रोजीरोटी की संभावनाएँ बहुत ही कम है। मॉरिशस में हिन्दी लेखन में मंदता की स्थिति व्याप्त है।

मॉरिशस की बदलती समाज-संस्कृति :

मॉरिशस में रहने वाले प्रवासी भारतीय के दूसरी पीढी होने के बावजूद वे अपने को हमेशा एक भारतीय ही समझते थे। वे हमेशा कहते थे कि "मॉरिशस मेरी जन्म भूमि है और भारत मेरी सांस्कृतिक भूमि है।"[6] अनत जी को पता है कि गाँधी के आह्वान से प्रवासी भारतीयों ने राजनीति में सक्रिय भागीदारी किया जिससे उनके जीवन में एक नई जागरूकता, नई चेतना और संघर्ष की नई शक्ति उत्पन्न हुई। मॉरिशस में विदेशी शासन समाप्त होने के बाद भी शासन–तंत्र की गतिविधि आसानी से समाप्त नहीं हुई। मॉरिशस के संस्कृति को लेकर उनका विचार है कि "विदेशी शासन के अत्याचारों को झेलकर अपनी संस्कृति की रक्षा कठिन तो होती है लेकिन असंभव नहीं. भारते में भी वैसा हुआ और मॉरिशस में भी, लेकिन अपने लोगों के दोगलेपन के बीच अपनी संस्कृति को बचा पाना असंभाव प्रतीत होता है।"[7]

मॉरिशस के प्रवासी भारतीय की तीसरी पीढी होने पर भी रामदेव धुरंधर हमेशा भारतीय तत्वों से ही जी रहे हैं। मॉरिशस के प्रवासी भारतीयों में द्वयं संस्कृति का प्रचलन चल रहा है। एक पाश्चात्य संस्कृति है और दूसरा भारतीय संस्कृति। वे इस बात से सेहमत हैं कि "एक तरह से दोनों कंधों से कंधा मिला कर ही चल रही हैं, लेकिन छाप प्रबलता से पाश्चात्य की ही है।"[8] उन्हें इस बात की दुख है कि मॉरिशस के प्रवासी भारतीयों में भारतीयता विलुप्त हो रहा है। पर उन्हें दृढ विश्वास है कि भविष्य में भी भारतीय संस्कार मॉरिशस में रहेगा।

महा उपन्यासों का उद्देश्य :-

साक्षात्कार के दौरान अनत द्वारा कृत महा उपन्यास 'लाल पसीना' के बारे में कुछ महत्त्वपूर्ण बातों को सांझा करते हैं। 'लाल पसीना' 1850 से 1900 तक होनेवाली कहानी है। इस उपन्यास में पात्रों से संबंधित घटनाओं को बडी ईमानदारी से प्रस्तुत किया है। भारत से आए मजदूरों की त्रासदपूर्ण कहानी को ऐतिहासिक और औपन्यासिकता के साथ दर्शाया है। इस उपन्यास के संबंध में अभिमन्यु का कथन है– "दस साल से अधिक समय तक 'लाल पसीना' को मैं अपने जेहन में जीता रहा। पास–पडोस के सबसे वृद्ध लोगों से मिलकर उनसे बातें करता रहा।"[9] 'लाल पसीना' उपन्यास के तीन भाग हैं– पहले भाग जहाँ मजदूरों को अपनी भारतभूमि छोडकर काम करने पर विवश हुए। 1901 को गाँधी जी का आगमन मॉरिशस में हुआ, उपन्यास की दूसरी कडी गाँधी से प्राप्त मनोबल के आधार पर है। तीसरी भाग में मॉरिशस के आजादी के बाद से राजनीतिक छलावे तक की गाथा है।

रामदेव धुरंधर का 'पथरीला सोना' छः खंडीय उपन्यास है जिसके रचना भूमि काल 1834 से 2000 तक का है। 125 वर्षों की कहानी है यह उपन्यास। भारतीय मजदूर जो मॉरिशस के पत्थर के नीचे सोना लेने के सपने में आए थे, असलियत में वह एक छल है। इस उपन्यास के तीन खंडों में मॉरिशस में भारतीय मजदूरों के आगमन सन 1834 से लेकन सन 1912 तक की सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि पर कहानी को पिरोया है। अगले तीन खंडों में 1912 से 2009 तक की समयावधि की कथा है। पूर्वजों के यातनाओं को रामदेव उनके जुबान से सुनाया करते थे। यह उपन्यास पच्चीस साल की खोज है। इस इतिहास को लिखने का मकसद रामदेव जी ने पूर्वजो की श्रद्धांजलि के रूप में माना जाता है।

निष्कर्षतः मॉरिशस में जन्मे दोनों समकालीन साहित्यकार अंग्रेजी प्रलोबन को त्याग कर जन पथ पर चलने का निर्णय लिया। जीवन पर्यंत मॉरिश्स में ही हिन्दी साहित्य के लिए काम करते रहे। यह दोनों हिन्दी

लेखकों का नाम, विश्व के विशाल साहित्य परिवार में एक अग्रगन्य स्थान प्राप्त किए हैं। जिनकी शाखाएँ विश्व भर में फैली हुई है। इन साहित्यकारों के रचनाओं के कारण भारत और मॉरिशस के बीच का संबंध और मजबूत हुआ है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची :-

1. डॉ श्रीचित्रा वी एम, उपन्यासकार अभिमन्यु अनत, पृ. 150
2. दीपक कुमार पाण्डेय, मारेशस लेखक : रामदेव धुरंधर्न साक्षात्कार के आईने में, स्वराज प्रकाशन, पृ. 24
3. कमल किशोर गोयनका, अभिमन्यु अनत की साहित्य–यात्रा, गाँधी बोले थे, राजकमल प्रकाशन, पृ. 9
4. कमल किशोर गोयनका, अभिमन्यु अनत की साहित्य–यात्रा, गाँधी बोले थे, राजकमल प्रकाशन, पृ. 80
5. दीपक कुमार पाण्डेय, मारेशस लेखक : रामदेव धुरंधर्न साक्षात्कार के आईने में, स्वराज प्रकाशन, पृ. 128
6. कमल किशोर गोयनका, अभिमन्यु अनत की साहित्य–यात्रा, गाँधी बोले थे, राजकमल प्रकाशन, पृ. 77
7. कमल किशोर गोयनका, अभिमन्यु अनत की साहित्य–यात्रा, गाँधी बोले थे, राजकमल प्रकाशन, पृ. 21
8. दीपक कुमार पाण्डेय, मारेशस लेखक : रामदेव धुरंधर्न साक्षात्कार के आईने में, स्वराज प्रकाशन, पृ. 98
9. कमल किशोर गोयनका, अभिमन्यु अनत की साहित्य–यात्रा, गाँधी बोले थे, राजकमल प्रकाशन, पृ. 197

E mail: amudhav.hindi@vistas.ac.in

Mobile : 9840824531

Mobile: 7299012063